संपादकीय

एनएफपीटीई/एनएफटीई का 70वां स्थापना दिवस

हम बीएसएनएल और डाक विभाग के कर्मचारी 24 नवंबर 2023 को एनएफपीटीई/एनएफटीई का स्थापना दिवस मनाने जा रहे है।

इस मजबुत संगठन की स्थापना 24 नवंबर 1954 एक पुनर्गठन योजना के तहत की गई थी। उस समय डाक और तार विभाग संचार मंत्रालय के तहत एक संयुक्त विभाग था। श्री जगजीवन राम संचार मंत्री थे और उन्होंने सभी क्षेत्रीय कैडर और कास्ट आधारित यूनियन/एसोसिएशन को एकछत्र संगठन के तहत एकीकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसे "नेशनल फेडरेशन ऑफ पोस्ट एंड टेलिग्राफ्स इम्पोलोइस (एन.एफ.पी.टी.ई.) नाम दिया गया था यह संगठनों यूनियनों के साथ संगठन तीव्र गति से विकसित हुआ। एनएफपीटीई की स्थापनाएक फेडरेशन और नौ यूनियनों के रुप में स्थापित थी। (i) ऑल इंडिया टेलीग्राफ इंजीनियरिंग कर्मचारी संघ वर्ग (ii) अखिल भारतीय टेलीग्राफ यातायात कर्मचारी संघ वर्ग (iii) ऑल आई टेलीग्राफ ट्रैफिक एम्प्लांइज यूनियन (टेलीग्राफ मैसेंजर और ग्रुप 'डी' (v) ऑल इंडिया पोस्टल एम्प्लांइज यूनियन क्लास (iv) ऑल इंडिया पोस्टल एम्पलाइज यूनियन पोस्टमैन और ग्रुप 'डी'(vii) ऑल इंडिया आरएमएस कर्मचारी संघ वर्ग (viii) अखिल भारतीय आरएमएस और एमएमएस कर्मचारी संघ मेल गार्ड और ग्रुप 'डी' (ix) अखिल भारतीय पोस्ट और टेलीग्राफ प्रशासनिक संघ समूह 'सी और समूह 'डी' । ये उपरोक्त यूनियनें नेशनल फेडरेशन ऑफ पोस्ट टेलीग्राफ एम्पलाइज(एनएफपीटीई) से संबद्ध थी।

शुरुआत में संविधान के तहत एक प्रावधान बनाया गया था जिसके तहत इन सभी नौ यूनियनों के लिए फेडरेशन से संबद्धता अनिवार्य थी और फेडरेशन पर यह बाध्यता थी कि वह किसी भी 10वीं यूनियन को संबद्ध नहीं कर सकता। इन परिस्थितियों में बृद्ध एकता विकसित हुई और एनएफपीटीई की सदस्यता सात लाख से ऊपर हो गई। का. दादाघोष, का. अंजनेमुलु, का. डी. गनैयाह।

एक के बाद एक महासचिव बने और उनके बाद कॉम.ओ.पी.गुप्ता जी को शक्तिशाली संगठन एनएफपीटीई का महासचिव चुना गया। इतिहास गवाह है कि एनएफपीटीई सेवा की शर्तों और शर्तों में कई लाभ और छूट दिलाता रहा है। एनएफपीटीई का कार्यभार संभालने के बाद कॉमरेड गुप्ता जी ने इस संगठन में बहुत योगदान दिया और सेवा शर्तों, पदोन्नति, वेतन आयोग आदि में ऐतिहासिक बदलाव लाए। 1960 में सभी केंद्रीय सेवा संघों ने निर्णय लिया और हड़ताल पर चले गए इस हड़ताल में एनएफपीटीई ने ऐतिहासिक भूमिका निभाई और साबित कर दिया कि एनएफपीटीई श्रमिक वर्ग का अगुआ है। इसने केंद्र सरकार के अधीन सभी श्रमिको को एकता का मार्ग दिखाया। और इस प्रकार एनएफपीटीई केंद्रीय सेवाओं की यूनियनों के बीच एक अग्रणी संगठन बन गया।

आसमान छूती विकास और कार्यप्रणाली ने देश के शीर्ष राजनीतिक नेताओं को परेशान कर दिया और 19 सितंबर 1968 को एक दिवसीय हड़ताल के बाद इस शक्तिशाली संगठन के लिए काला अध्याय लाया गया। हड़ताल पूरी तरह सफल रही और सरकार अपने राजनीतिक लाभ के लिए कार्यकर्ताओं को बांटने का मौका मिल गया। हालांकि एनएफपीटीई राजनीतिक रुप से बेरंग था और उनके संघ आधारित किसी भी राजनीतिक केंद्र से संबद्ध नहीं था। सरकार रातों–रात एनएफपीटीई की मान्यता रद्द कर दी। एनएफपीटीई के सभी राज्य और केंद्रीय स्तर के नेताओं को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। मंडल और जिला स्तर के अधिकांश नेताओं को निलंबित, बर्खास्त और सेवा से बर्खास्त कर दिया गया। एक तरफ सरकार के हमलों ने श्रमिक को भयभीत कर दिया और दूसरी ओर नेताओं पर बुरी तरह से दबाव बनाया गया। एक नए महासंघ एनएफपीटीई को जन्म देकर श्रमिकों को विभाजित करने का प्रयास किया गया। एनएफपीटीई की मान्यता कई वर्षों तक रद्द रही और इस अवधि के बीच एनएफपीटीई को अपने संगठन में सुधार करने के लिए खुले स्थान मिले और वे कुछ हद तक सफल हुए। 1972 तक यह संगठन लगभग सभी क्षेत्रों में अपने शाखाओं को खोलने में सक्षम हो गया। 4 साल के संघर्ष और नेताओं के कई बलिदानों के बाद, एनएफपीटीई की अपनी मान्यता बहाल हुई। कड़ी मेहनत और मध्य नीति की विचारधारा वाले कॉमरेड गुप्ता न केवल पीएंडटी कार्यकर्ताओं के बल्कि पूरे केंद्र के सबसे लोकप्रिय नेता बन गए।

कॉमरेड गुप्ता ने देश के कोने–कोने का दौरा किया और अधिकांश श्रमिक अपने पैतृक संघ लौट आए, वे फिर से एनएफपीटीई में शमिल हो गए। 1968 से 1978 तक एनएफपीटीई अग्रणी भूमिका में थी आर संघ सरकार द्वारा कई व्यवधानों और बड़े हमलों के बाद भी प्रतिदंवदिता के साथ–साथ एनएफपीटीई पी एंड टी विभाग के कर्मचारियों के सत्तर प्रतिशत समर्थन के साथ आगे बढ़ी रही।

श्रमिकों को विभाजित करने और एनएफपीटीई को बाधित करने का दूसरा राजनीतिक हमला वर्ष 1978 में फिर से हुआ। अब एनएफपीटीई सभी नौ संबद्ध यूनियनों के प्रतिनिधियों को लेकर एक सेमिनार आयोजित करने में व्यस्त था और इसे पटना में आयोजित किया गया था। सेमिनार का आयोजन पटना के कुंवर सिंह पार्क में किया गया, जिसमें सभी पी एंड टी विंगों के पांच हजार से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस विशाल सेमिनार में उपस्थित सभी नौ महासचिवों ने महसूस किया कि पी एंड टी कर्मचारियों के लिए सेवा अवधि में या किसी अन्य केंद्रीय सेवा में श्रमिकों के लिए कोई पदोन्नति का अवसर उपलब्ध नहीं है।

कामरेड गुप्ता ने समूह 'सी' और 'डी' के सभी कर्मचारियों के लिए तीन पदोन्नति की मांग रखी और सेमिनार में तीन दिनों तक गहन चर्चा हुई, फिर आंतरिक विरोधियों के कई प्रतिरोधों के बाद तीन पदोन्नति की मांग के प्रस्ताव को पारित किया गया। इस अवसर से पहले कर्मचारियों की सेवा अवधि में कर्मचारियों के लिए कोई पदोन्नति का अवसर नहीं था।

सेमिनार के आखिरी दिन दिल्ली से एक ब्रेकिंग न्यूज आई कि जनता पार्टी की सरकार स्वर्गीय मोरारजी भाई देसाई के नेतृत्व में तत्कालीन केंद्रीय संचार मंत्री श्री बोनी प्रसाद वर्मा जी की कृपा से भारतीय दूरसंचार महासंघ (बीटीईएफ) के नाम से एक नए महासंघ को मान्यता प्रदान की गई है।

पूरे पांच हजार प्रतिनिधियों और एनएफपीटीई के सभी नेताओं ने पटना के कदमकुआं मोहल्ले में जननायक जयप्रकाश जी के आवास तक मार्च किया। श्री जयप्रकाश जी ने धैर्यपूर्वक सारी बात सुनी कि कैसे सरकार ने कर्मचारियों की एकता को तोड़ा। उन्होंने अपने घर के प्रथम तल से साउंड सिस्टम के माध्यम से आश्वासन दिया कि वह प्रधानमंत्री से बात करेंगे और इस मामले में पूछताछ करेंगे लेकिन उस समय तक श्री जे.पी. अपने खराब स्वास्थ्य के कारण अप्रभावी हो गये थे। इस मामले में कुछ नहीं किया जा सका था। सेमिनार के समापन के बाद सभी नेता और कार्यकर्ता अपने स्थानों पर लौट गए। सरकार द्वारा दो बार विघटनकारी हमले के बावजूद उन्हें दूसरे व्यवधानों का डटकर सामना करना पड़ा। एनएफपीटीई पीएंडटी विभाग के कर्मचारियों के आंदोलन में हमेशा अग्रणी रहा है।

इस प्रकार, पी एंड टी विभाग में तीन संघर अस्तित्व में आए। पी एंड टी विभाग को दो भागों में विभाजित किया गया। इस वर्ष 1968 में डाक विभाग और दूरसंचार विभाग के रुप में स्वतंत्र विभाग का दर्जा दिया गया।

इस विभाजन का असर एनएफटीई पर भी पड़ा और इसे भी एनएफटीई और एफएनटीओ के रुप में दो भागों में विभाजित कर दिया गया।

एनएफपीटीई से विभाजन के बाद एनएफटीई ने एक ही झंडे और एक ही प्रतीक चिन्ह के साथ अपना कामकाज शुरु किया।

इसी अवधि में दिल्ली और मुंबई की दूरसंचार सेवाओं को प्रत्येक कर्मचारी को एक सौ रुपये के अतिरिक्तम भुगतान के साथ निगम में परिवर्तित कर दिया गया। सरकार के इस एकतरफा फैसले पर एनएफटीई ने लगातार 20 दिनों तक संघर्ष किया, लेकिन रुपये की बढ़ोतरी का मामला का निपटारा नहीं हुआ परंतु सरकार और एनएफटीई के बीच कुछ अन्य लाभकारी समझौते हुए।

एनएफपीटीई ने हमेशा बेहतर सेवा स्थिति, बेहतर वेतन, बेहतर प्रचार अवसर आदि के लिए संघर्ष किया और कर्मचारियों के लिए कई लाभकारी योजनाएं लाई। 1995 से 1999 के बीच कॉम. ओ.पी गुप्ता जी ने कैडर को एकीकृत करके सभी कर्मचारियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण लाभ पहुंचाया।

1987 से 1998 तक उन्होंने अपनी बुद्धिमानी का इस्तेमाल किया और लगभग एक लाख आकस्मिक मजदूरों और आरटीपीएस को नियमित करने में कामयाबी हासिल की।

प्रतिबंध के माध्यम से कर्मचारी की वित्तीय और सामाजिक स्थिति को उन्नत किया गया और ओटीबीपी, बीसीआर और ग्रेड IV की तीन पदोन्नति के साथ सभी को बेहतर वेतन और बेहतर कामकाजी स्थिति मिली।

वर्ष 1999 में केंद्र सरकार एक नई दूरसंचार नीति लेकर आई। इसके कार्यान्वयन और लक्ष्य पूरा करने के नाम पर सरकार दूरसंचार संचालन और दूरसंचार सेवाओं के विभाग को एक निगम में बदलने का निर्णय लिया। कर्मचारियों के तमाम विरोध के बावजूद 01.10.2000 को सरकार ने निगम के गठन का निर्णय लिया।

एनएफटीई और अन्य दो महासघ 6 सितंबर 2000 से हड़ताल पर चले गए। बीटीईएफ पहले ही दिन हड़ताल से हट गया लेकिन एफएनटीओ पूरी तरह से एनएफटीई और कामरेड ओ.पी गुप्ता जी के साथ खड़ा रहा। परिणामस्वरुप महासंघों और सरकार के बीच एक समझौता हुआ। जिससे निगम में कार्यरत कर्मचारियों का भविष्य सुरक्षित हो गया है

एनएफटीई जिसने सरकार से संयुक्त सेवा के लिए कर्मचारियों को पेंशन, नौकरी की सुरक्षा और वित्तीय रुप से निगम की व्यवहार्यता के लिए संघर्ष किया, ने दूसरे सत्यापन में अपनी मान्यता खो दी और वर्ष 2013 में एक नया मान्यता नियम बनने तक एनएफटीई गैर–मान्यता प्राप्त रहा। नए मान्यता प्राप्त रहा। नए मान्यता नियम में दो यूनियनों की मान्यता की अवधारणा को स्वीकार किया गया। इस प्रकार एनएफटीई ने फिर से अपनी गौरवशाली स्थिति बहाल कर दी।

एनएफटीई के सभी सदस्य एनएफटीई के समर्पित सैनिक हैं। वे बीएसएनएल की बेहतर सेवाओं के लिए योगदान दे रहे हैं और वे श्रमिकों की एकता के लिए काम करते रहे हैं।

अब एनएफपीटीई/एनएफटीई का 70 वां स्थापना दिवस 24 नवंबर 2023 को है। हम सभी समर्पित कार्यकताओं से एनएफपीटीई/एनएफटीई के स्थापना दिवस को भव्य तरीके से मनाने और कार्यकर्ताओं को इस शक्तिशाली संगठन के गौरवशाली इतिहास से शिक्षित करने का आग्रह करते हैं।

एनएफटीई जिदाबाद–श्रमिक एकता जिंदाबाद

EDITORIAL

70th Foundation Day of NFPTE/NFTE

We the workers of BSNL and department of post are going to celebrate the 70th foundation day of NFPTE/NFTE on 24th November 2023.

This mighty organization was established under a realignment scheme on 24th November 1954. In those time Post and Telegraphs department was a combined department under the ministry of communication, Shri Jagjivan Ram was the communication minister and he played a vital role in amalgamation of all the sectorial cadre and cast-based union/association under one umbrella organization which was named with "National Federation of Post and Telegraphs Employees" (NFPTE). The organization grown up with fast speed with nine unions. The NFPTE was established as a Federation and nine unions viz. (i) All India Telegraphs Engineering employee's union class III. (ii) All India Telegraphs Engineering employees union line staff and group 'D'. (iii) All India Telegraphs Traffic Employees union class III. (iv) All India Telegraphs Traffic Employees union (Telegraphs messenger and group 'D') (v) All India Postal Employees union class III. (vi) All India Postal Employees union Postman and Gr. 'D'. (vii) All India RMS Employees union class III. (viii) All India RMS and MMS Employees union Mail Guard & Gr. 'D'. (ix) All India Post & Telegraphs Administrative union Group 'C' & Group 'D'.

These above unions were affiliated with the National Federation of Post and Telegraphs Employees (NFPTE).

In beginning a provision under constitution was made under which affiliation with federation was compulsory for all these nine unions and there was a binding upon the federation that it cannot affiliate any 10th union. In these conditions a greater unity was developed throughout the county and membership of NFPTE come above seven lakhs. Com. Dada Ghosh, Com. Anjaneyulu, Com. D. Gnanaiah became the secretary General one by one and after them Com. O.P. Gupta Jee was elected as Secretary General of mighty organization NFPTE. The history is witness that the NFPTE brought several benefits and relaxation in term and conditions of service. After taking over the charge of NFPTE Com. Gupta Jee contributed a lot to this organization and brought historical change in service condition, promotion, pay commission and so on. All central service unions decided and went on strike in 1960 and in this strike the NFPTE played an historic role and proved that the NFPTE is the vanguard of the working class. It shown the path of unity to all the workers under central Govt. and thus the NFPTE became a leading organization among unions of central services.

The sky touching growth and functioning disturbed the top political leaders of the country and after one day strike on 19 September 1968 brought black chapter for the mighty organization. The strike was total success and the Govt. in center got a chance to divide the workers for their political gain. Though the NFPTE was Politically colourless and not affiliated to any political center based their union. Govt. derecognized the NFPTE over night. All the state and Central level leaders of NFPTE were arrested and sent to jail. Most of the circle and district level leaders were, suspended, discharged and dismissed from the service. One side the Govt. severe attacks put-on the workers in fear and other side the leaders were badly attacked and the union govt. borned a new child to divide the workers by giving birth of a new federation FNPTO. The NFPTE remained derecognized for several years and in between this period FNPTO found open spaces to improve their organization and they become success upto some extent and upto 1972 this organization became able to open its branches in almost all circles. After 4 years of struggle and several sacrifices by the leaders, the NFPTE got its recognition restored and the hard working and with ideology of middle road policy Com. Gupta became the most popular leader of not only of P&T workers but for all the central Govt. workers. Com. Gupta toured to nook and corner of the country and the majority of workers return to their paternal home they joined the NFPTE again. From 1968 to 1978, the NFPTE was in leading role and even after

several disruption and major attack by the union govt. as well as by the opponent, the NFPTE moved forward with seventy percent support of the workers of P&T department.

The 2nd political attack to divide workers and disrupt the NFPTE came again in the year 1978 when the NFPTE was much busy in organizing a seminar, taking the delegates from all the nine affiliated unions and it was be conducted at Patna. The seminar was organized at Patna in Kunwar Singh park with over five thousand participation of delegates from all the P&T wings. All the nine general secretaries were present in this massive seminar which felt that there is no promotional avenue is available in service period for P&T employees or in any other central service for workers.

Com. Gupta put a demand of three promotion to all employees irrespective of Group 'C' and 'D' and three days deep discussion took place in the seminar and then after several resistances from internal opponents, the resolution was passed in favour of demand of three promotion in service period of an employee before this there was no promotional avenue for the employees.

On last day of the seminar one lighting breaking news came from the Delhi that the Janata Party govt. lead by Late Morarjee Bhai Desai has granted recognition to a new federation in name of 'Bhartiya Telecom Employees Federation' (BTEF) by the grace of Shri Beni Prasad Verma Ji, the then union communication minister for communication.

The entire five thousands delegates and all the Leaders of the NFPTE, marched to the Jannayak Jai Prakash Jee residence in Kadam Kuan mohalla at Patna. Shri Jai Prakash Ji patiently heard the story how the Govt. breaking the unity of workers and he assured through a sound system from the first floor of his house,that he will talk to the Prime Minister and enquire in the matter but upto that time J.P. was became ineffective due to his ill health and nothing could be done in the matter. After the completion of seminar all the Leaders and workers returned to their places and they faced the second disruption with tooth and nail and despite twice disruptive attack by the Govt, the NFPTE always remain in forefront in the movement of the workers of P&T department.

Thus, the three federations came in the existence in P&T department. The P&T department was divided in two parts and it was given status of the independent department as department of Posts and department Telecom in the year 1986.

This division effected the NFPTE also and it was also divided in two parts as NFTE and NFPE.

The NFTE after division from NFPTE started its functioning with same flag and same symbol.

In the same period the Telecom services of Delhi and Mumbai were converted into corporation with an extra payment of Rs one hundred to each employee. On this unilateral decision of the Govt NFTE went on struggle for continuous 20 days. The issue of enhancement of Rs. One hundred was not settled but some other beneficial agreements were reached between the Govt. and NFTE.

The NFPTE always fought for the better service condition, better salary, better promotional avenue etc. and brought several beneficial schemes for the employees. Between 1995 to 1999 Com. O.P. Gupta Jee brought a very significant gain for all the employees through restructuring of cadres.

From 1987 to 1998 he used his wise vision and managed regularization of One Lakh casual mazdoors and RTPs.

Through restricting the financial as well as social status of employees were upgraded and with two promotions of OTBP, BCR and grade IV all got a better salary and better working status.

In the year 1999 the union govt brought a new Telecom policy and in name of its implementation and completion of target the Govt. decided to convert the department of Telecom operation and Telecom services into a corporation and despite all the resistance from workers the Govt. decided the formation of corporation w.e.f. 01.10.2000.

The NFTE and other two federation went on strike from 6th September 2000. The BTEF went out from the strike on very first day it self but the FNTO completely stand with NFTE and Com. O.P. Gupta

Jee.

The result come with an agreement between federations and the Govt. which has secured the future of the employees observed in corporation.

NFTE which granted Govt. pension to the employees for combined service, Job security and viability of the corporation financially, lost its recognition in 2nd verification and till formation of a new recognition rule in the year 2013 the NFTE remain unrecognized. In the new recognition rule concept of recognition of two unions was accepted and thus NFTE again regained its glorious position.

The entire members of NFTE are the dedicated soldiers of NFTE. They are contributing better services to the BSNL and they work for the unity of workers.

Now the 70th Foundation day of NFPTE/NFTE is at hand on 24th November 2023. We urge upon all the Breaches to celebrates the foundation day of NFPTE/NFTE in grand manner and educate the workers with glorious history of this mighty organization.

NFTE ZINDABAD - WORKERS UNITY ZINDABAD